लक्ष्मी प्राप्ति के पांच कल्पों से एक है "रुद्राक्ष कल्प"

हमारे यहाँ रुद्राक्ष को साक्षात् शंकर का रूप माना जाता है। पहले हमारे देश में साधु महात्मा ही रुद्राक्ष धारण करते थे या फिर बुजुर्ग जो पूजा पाठ आदि में ध्यान लगाते थे। प्राचीन समय में महापुरुष रुद्राक्ष धारण करते थे परंतु आज हमारे देश में प्रत्येक जाति धर्म के लोग रुद्राक्ष धारण करते हैं। कारण स्पष्ट है कि रुद्राक्ष के आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, आर्युर्वेदिक गुणों को देखते हुए हर कोई इन्हें धारण करना चाहता है। प्रायः रुद्राक्ष एक से चौदह मुखी तक पाये जाते हैं और इन रुद्राक्षों में भी एकमुखी रुद्राक्ष का अत्यधिक महत्व बतलाया गया है। रुद्राक्ष के जन्मदाता भगवान शंकर हैं। रुद्र का अर्थ है-शिव और अक्ष का अर्थ है-अश्रु! रुद्र और अक्ष मिलकर 'रुद्राक्ष' बना है। यह बेर या मटर के आकार का दाना होता है। प्राचीनकाल से भारत के पौराणिक ग्रंथों में रुद्राक्ष का वर्णन और महात्म्य चला आ रहा है। अनेक ग्रंथों में इसका वर्णन पाया जाता है और बहुत समय से साधु संन्यासी इसे धारण करते आ रहे हैं। सिर पर, बाजुओं पर या गले में रुद्राक्ष या रुद्राक्ष की माला धारण करने का विधान प्राचीनकाल से चला आ रहा है.....धार्मिक समाज के लिए रुद्राक्ष नयी बात या आश्चर्य नहीं है। इससे किस प्रकार जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है, आईये जानें...!!

रुद्राक्ष में आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाहित होती है, क्योंकि एकमुखी रुद्राक्ष शिव, दोमुखी गौरीशंकर, तीनमुखी अग्नि, चारमुखी ब्रह्मा, पंचमुखी पंचदेव, छहमुखी कार्तिकेय, सप्तमुखी विष्णु, अष्टमुखी गणेश, नौमुखी भगवती दुर्गा, दसमुखी भगवान विष्णु, ग्यारहमुखी महारूद्र, बारहमुखी विष्णु, तेरहमुखी इन्द्र तथा चौदहमुखी को साक्षात् हनुमानजी का रूप माना गया है। इसके अतिरिक्त गणेश और गौरी शंकर रुद्राक्ष भी मिलते हैं, लेकिन ये दुर्लभ तंत्र साधना और कुंडलिनी जागरण में महत्वपूर्ण होते हैं।

रुद्राक्ष कल्प

जो साधक एक साथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हों, उन्हें यह कल्प अवश्य ही उपयोग करना चाहिए। यद्यपि यह कल्प मंहगा है परन्तु अन्ततः इसे सिद्ध करने के बाद जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

सामान्य रुद्राक्ष ही व्यक्ति को उन्नति देने में और पापों को दूर करने में सहायक हैं। रुद्राक्ष से संबंधित विशेष लेख पत्रिका के पूर्व अंकों में भी दिये जा चुके हैं। यहां पर रुद्राक्ष से संबंधित प्रयोग न देकर रुद्राक्ष कल्प की विधि स्पष्ट की जा रही है।

रुद्राक्ष कल्प के लिये एक मुखी रुद्राक्ष आवश्यक है। यह रुद्राक्ष दुर्लभ है परन्तु फिर भी प्राप्त हो जाता है। बाजार में कई नकली रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं और एकमुखी रुद्राक्ष बताकर तो बेचने वाले हर स्थान में पाये जाते हैं। अतः सोच-समझकर तथा जानकार व्यक्ति को दिखाकर ही एक मुखी रुद्राक्ष प्राप्त करना चाहिए।

एक मुखी रुद्राक्ष गोल या काजू के आकार का होता है। काजू के आकार का रुद्राक्ष दुर्लभ है और यह कठिनाई से प्राप्त हो पाता है।

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि से या चैत्र शुक्ला अष्टमी से किया जा सकता है। सर्वप्रथम चांदी की थाली या कटोरी में चन्दन या केशर से अष्टदल बनावे और उस पर इस रुद्राक्ष को स्थापित कर दें। स्थापित करने से पूर्व इस रुद्राक्ष को मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त तथा एक मुखी रुद्राक्ष के मंत्र से चैतन्य कर दे। इसके बाद इस रुद्राक्ष का 108 लाल पुष्पों से पूजन करें, प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें:-

मंत्रः- ॐ एं हं औं ऐं ॐ।

इसके बाद रुद्राक्ष के सामने दीपक व अगरबत्ती जलाये। केशर, चन्दन, तथा कपूर बराबर-बराबर लेकर उसे घोट कर अर्थात् मिलाकर इस रुद्राक्ष पर तिलक करे और फिर निम्न मंत्र की 11 मालाएं उस रुद्राक्ष के सामने फेरे। प्रत्येक बार मंत्र पढ़कर एक कमल गट्टा, एक इलायची, एक पुष्प (किसी भी प्रकार का पुष्प) उस रुद्राक्ष पर चढ़ावे। इस प्रकार दीपावली की रात्रि को पूरी 11 मालाएं फेरे यह माला कमल गट्टे की हो।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकमुखाय भगवतेऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकाम फलप्रदाय नमः।।

जब 11 मालाएं पूरी हो जायें तब साधक को चाहिए कि पुनः उस रुद्राक्ष की पूजा करें और सारी रात उसके सामने दीपक व अगरबत्ती लगाये रखें।

प्रातः काल उस रुद्राक्ष को सोने में मंढ़वाकर गले में धारण कर ले या अपनी तिजोरी में रख लें।

रुद्राक्ष के सामने जो इलायची, पुष्प तथा कमल गट्टा चढ़ाया था वह किसी कुंए, नदी या तालाब में विसर्जित कर दे।

यह एक श्रेष्ठ और आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग हैं तथा ऐसा प्रयोग सम्पन्न होने पर उस व्यक्ति के जीवन में कभी भी आर्थिक अभाव नहीं आता। यह सिद्ध एवं प्रामाणिक प्रयोग हैं, अतः आप भी आजमा कर देखिये। ♦♦♦

आपके सम्पूर्ण जीवन में निर्भय, निडर एवं जगमगाहट भरने के लिए

विशेष तंत्र रक्षा कवच

पन्द्रह प्रश्न :-

- क्या आप हर समय बीमार बने रहते हैं?
- क्या व्यर्थ की शत्रुता बढ़ रही है, हर समय शत्रुओं का भय बना ही रहता है?
- क्या कई वर्षों से आपका प्रमोशन रूका हुआ है?
- क्या व्यापार में उन्नति हो ही नहीं रही है या बंद सा हो गया है?
- क्या आपके घर में लक्ष्मी का आगमन रूक सा गया है या घाटा हो रहा है?
- क्या घर में परिवार में बराबर कलह बनी रहती है?
- क्या आप मानसिक तनाव से परेशान हैं?
- क्या संतान आज्ञा नहीं मान रही है?
- क्या बच्चों के विवाह में बराबर रूकावटें आती जा रही है?
- और बिना कारण मानहानि हो रही है?
- क्या पत्नी की तबीयत बिना वजह के ही ठीक नहीं रहती?
- क्या राज्य की तरफ से बराबर बाधाएं आ रही है?
- क्या ऋण या कर्जा बराबर बना रहता है?
- क्या भाग्योदय नहीं हो रहा है?
- क्या घर में अकाल मृत्यु हुई है?

एक उत्तर :-

तो संभव है कि आप पर या आपके परिवार पर किसी ने ईष्यावश या अन्य किसी कारण से तांत्रिक प्रयोग किया हो, या करवा दिया हो! हल :- और इसका एक मात्र हल है 'विशेष तंत्र रक्षा कवच'

इससे :- विभिन्न प्राचीन तांत्रिक ग्रन्थों से इन तांत्रिक प्रयोगों को निस्प्रभावी बनाने के लिए उपाय केन्द्र के विद्वान तांत्रिकों ने खोज निकाले हैं जिनका उपयोग करने पर व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग प्रभावी नहीं हो सकता। यंत्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित कर तैयार किया जायेगा, उसी को इसके विशेष लाभ प्राप्त हो सकेंगे...

इस दिव्यतम कवच की न्यौछावर राशि मात्र **15000** रूपये (पन्द्रह हजार मात्र) है और फिर इतने बड़े अनुष्ठान को देखते हुए यह धनराशि है भी क्या... कुछ भी तो नहीं

आप क्या करें :-

आप यदि तंत्र रक्षा कवच धारण करना चाहते हैं तो अपना नाम, अपने पिता का नाम, गौत्र अपने फोटो के पीछे लिखकर भेज दें। पत्र के साथ ही मात्र पूजा सामग्री व्यय एवं पंडितों की दक्षिणा के लिए ड्राफ्ट त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र जोधपुर के नाम से भेज दें।

आप द्वारा भेजी गई सूचनाएँ, फोटो एवं पूजा व्यय प्राप्त होते ही शुभ मुहूर्त में केन्द्र के विद्वान् कर्मकाण्डी ब्राह्मण पंडितों द्वारा विशेष रूप से आप ही के लिए 'तंत्र-रक्षा कवच' का निर्माण करवा कर आपको रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जाएगा।

न्यौछावर राशि-15000/-

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ,
पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001 (राज.)
फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111,
2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

आप सीधे ही 'त्रिनेत्र सिद्धि-केन्द्र' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
STATE BANK OF INDIA A/C NO. 329-8988-9790
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

श्रीमालीजी का कार्यक्रम- आस्था चैनल पर दोपहर 2:20 पर